






21053




₹ 15.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

**ISBN** 978-93-5007-353-7 (वर्षा-सैट)
978-93-5007-371-1



पठनम् एव अवगमनम्

# प्रपानकम्





***प्रथम संस्कृत संस्करण :*** अगस्त 2015 श्रावण 1937

***पुनर्मुद्रण :*** जून 2019 ज्येष्ठ 1941; जुलाई 2020 श्रावण 1942



**PD 153T RPS**

**पुस्तकमाला निर्माण समिति**

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, (स्वर्गीय) लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**संपादक ( संस्कृत )** – कृष्णचन्द्र त्रिपाठी

**संस्कृत अनुवाद** – रणजित बेहेरा, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

**चित्रांकनः** कनक शशि **सज्जा तथा आवरण–** निधि वाधवा

**संस्कृत समीक्षा समिति**

यज्ञ दत्त शर्मा, सेवानिवृत *प्रोफ़ेसर संस्कृत*, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर संस्कृत*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली; राजेश्वर प्रसाद मिश्र, *प्रोफ़ेसर संस्कृत*, संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा; भागीरथी नन्द, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, साहित्य विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली; पतञ्जलि कुमार भाटिया, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; सूर्य नारायण नन्द, *अतिथि अध्यापक*, सेंट स्टीफेन्स कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; हरेकृष्ण अगस्ति, *असिस्टैंट प्रोफ़ेसर*, व्याकरण विभाग, कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र; सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी. संस्कृत*, केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड; निर्मल मिश्र, *टी.जी.टी. संस्कृत*, केन्द्रीय विद्यालय, नरेला, दिल्ली; डॉ. जतीन्द्र मोहन मिश्र, *सह आचार्य,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

**आभार ज्ञापन**

प्रो. बी.के.त्रिपाठी, *निदेशक,* एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; कृष्ण कुमार, *पूर्व-निदेशक,* एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; वसुधा कामथ, *पूर्व-संयुक्त-निदेशक,* केन्द्रीय शैक्षिक प्रोद्योगिकी संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; उमा शंकर शर्मा ऋषि, *पूर्व विभागाध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार; के. के. वशिष्ठ, *पूर्व-विभागाध्यक्ष,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा चन्द्रप्रभु ऑफ़सेट प्रिंटिंग वर्क्स प्रा. लि., सी-40, सैक्टर-8, नोएडा 201 301 द्वारा मुद्रित।

**ISBN** 978-93-5007-353-7 (वर्षा-सैट)
978-93-5007-371-1

वर्षा-क्रमिक-पुस्तकमाला प्राथमिककक्षायाः बालानां कृते वर्तते। अस्याः अभिप्रायः – 'बोधनेन सह' स्वयंपठनस्य अवसरपरिकल्पनं वर्तते। अस्याः पुस्तकमालायाः कथाः चतुर्षु स्तरेषु पञ्चसु कथावस्तुषु च विभक्ताः सन्ति। 'वर्षा' बालानाम् सानन्दं पठने स्थायिपाठकत्वेन निर्माणे च सहायिका भविष्यति। बालेभ्यः दैनन्दिन्यः लघुलघुघटनाः कथा इव रुचिकराः प्रतीयन्ते। अतः वर्षा-मालिकायाः सर्वाः कथाः दैनिकजीवनस्य अनुभवान् आधृत्य वर्तन्ते। लघुबालानां पठनाय प्रचुरमात्रायां पुस्तकानि उपलब्धानि स्युरिति अस्याः पुस्तकमालायाः अपरमुद्देश्यं वर्तते।

वर्षा-पुस्तकमाला बालानां पठन-शिक्षणे, स्थायिपाठकनिर्माणे, सूचनासंग्रहणे पाठ्यचर्यायाः प्रत्येकं क्षेत्रे च सहायिका भविष्यति। शिक्षकाः वर्षा-मालिकां कक्षायाम् तथा स्थापयेयुः येन बालाः सुखेन पुस्तकानि ग्रहीतुं शक्नुयुः।



**एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय**

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बंगलूरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

***प्रकाशन सहयोग***

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*

# प्रपानकम्



तोसिया



मिली





एकदा तोसिया मिली च प्रपानकं निर्मितवत्यौ।
ते जले रक्तवर्णं प्रपानकं मेलितवत्यौ।







ते प्रपानके शर्कराम् अपि मेलितवत्यौ।
तत्र यथेष्टं हिमं योजितवत्यौ।





तोसिया मिली च प्रपानकं पातुम् उपाविशताम्।

ते प्रपानकं पिबन्त्यौ वार्तालापं कृतवत्यौ।





तोसिया हस्तौ दोलयन्ती वार्तां करोति स्म।

तस्याः हस्त–स्पर्शेन प्रपानकं पतितम्।



मिली तोसियायै स्वकीयं अर्ध प्रपानकं दत्तवती।

ते पुनः प्रपानकं पातुम् आरब्धवत्यौ।







तोसिया अधः पतितं प्रपानकं दृष्टवती।

सा पतितं प्रपानकं 'रङ्गम्' इति अमन्यत।





तोसिया प्रपानके अंगुल्या मत्स्य-निर्माणम् अकरोत्। सा मत्स्यस्य पुच्छम् अपि निर्मितवती।

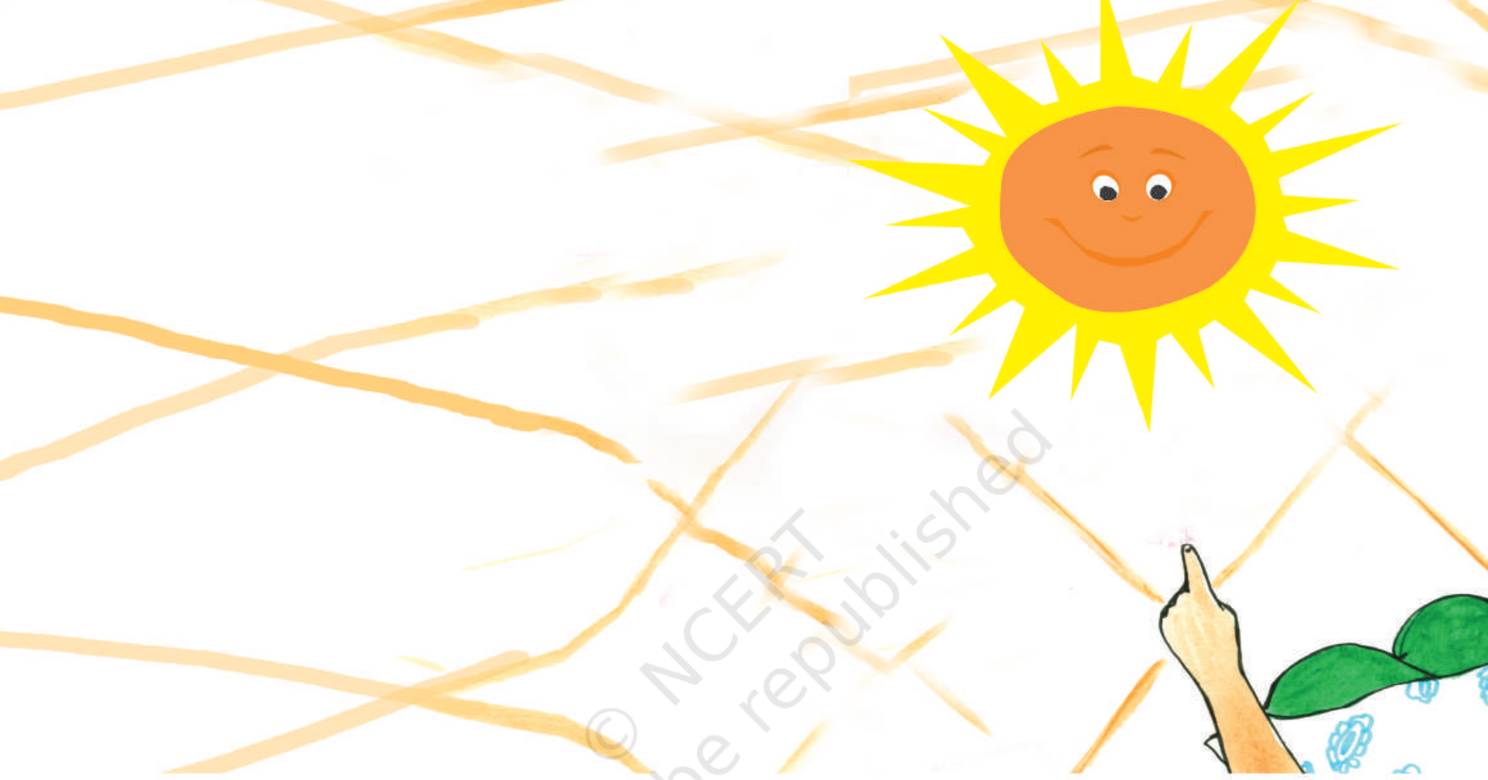






मिली पतितेन प्रपानकेन पुष्पं निर्मितवती।

पुष्पस्य अधः द्वे पत्रे अपि रचितवती।





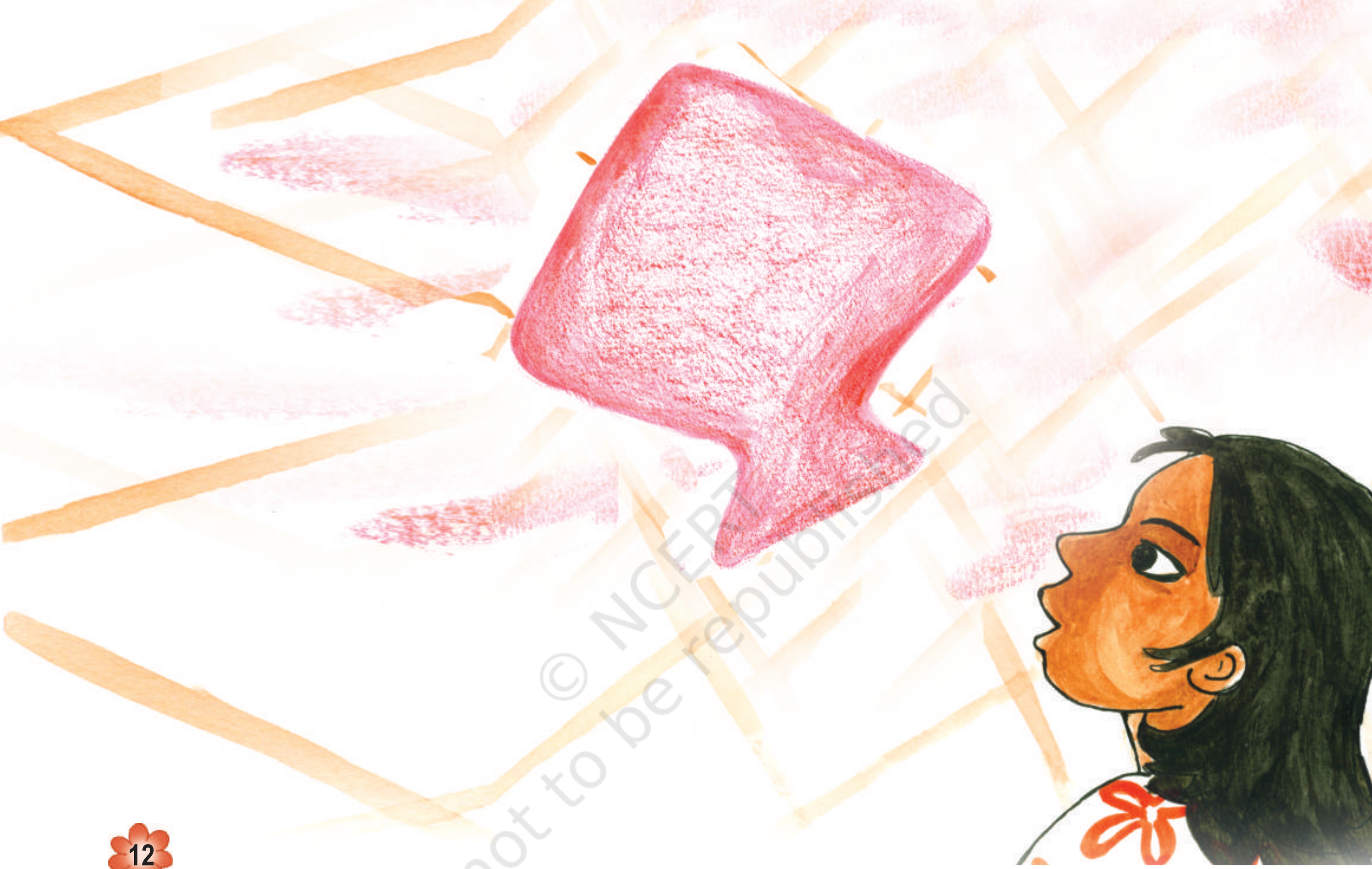


तोसिया पुष्पं संमार्ज्य सूर्यं रचितवती।

तोसिया सूर्यस्य दीर्घान् किरणान् अपि अरचयत्।



पुनः तोसिया एकां नौकाम् अरचयत्।
तोसिया नौकायां पताकां रचितवती।







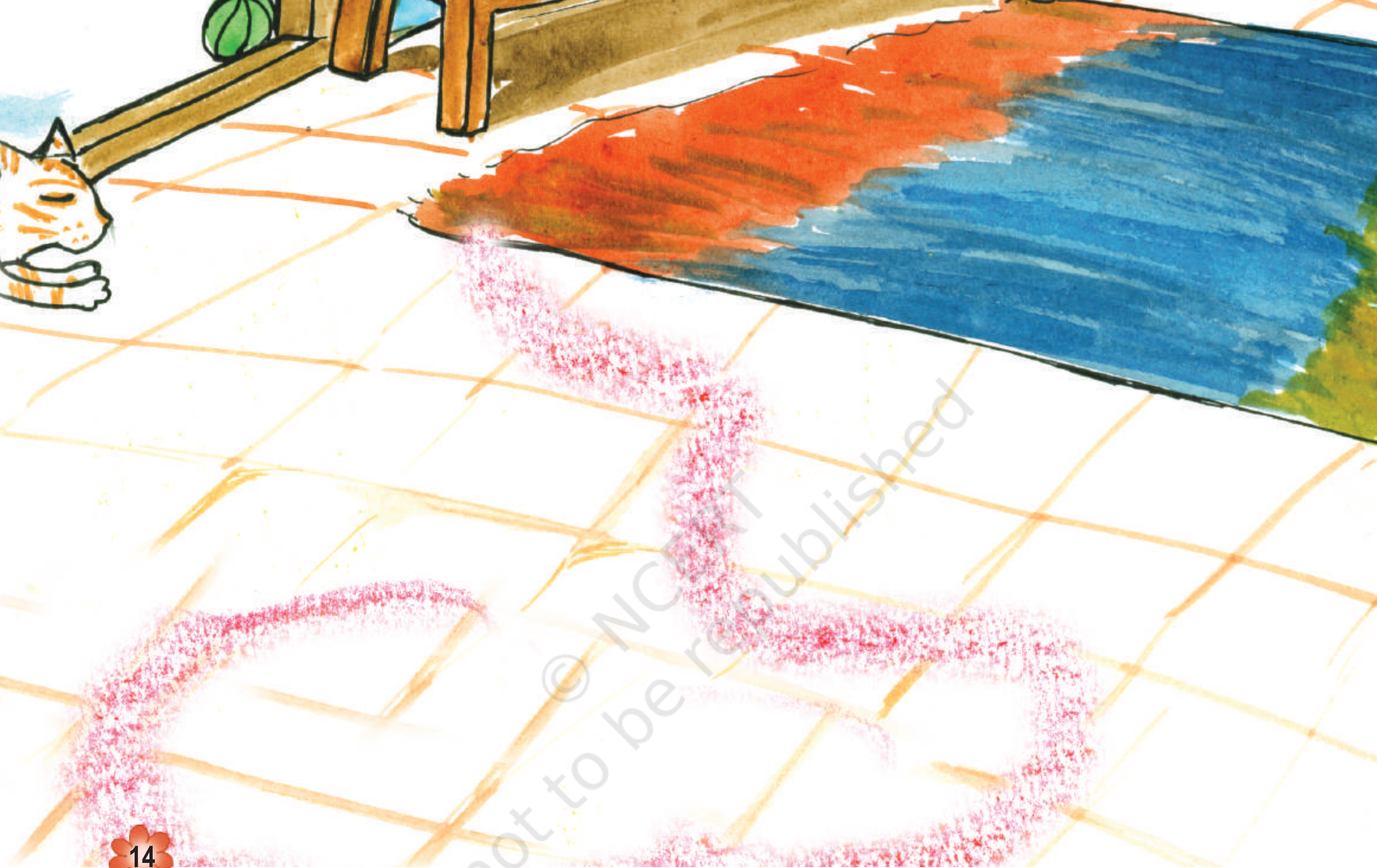
मिली तस्यां पताकायाम् एकां पतङ्गिकां निर्मितवती।

तोसिया पतङ्गिकायाः दीर्घं सूत्रम् अरचयत्।





सा पतङ्गिकायाः सूत्रं सम्पूर्णे कक्षे कर्षति स्म।
मिली ताम् अनु चलति स्म।





तोसिया अवदत् यत् ममताम् अपि आकारयावः।
ताम् एतत् सर्वं दर्शयिष्यावः।







तोसिया मिली च ममतया सह प्रत्यागतवत्यौ।

प्रपानकस्य पतङ्गिका सूत्रं च लुप्ते आस्ताम्।





तौ अपश्यतां यत् मुनमुनः सम्पूर्णं प्रपानकं पीतवती।

तोसिया मिली च उच्चैः अहसताम्।

# तोसिया-मिल्योः अपराः कथाः



















